Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 4, July-2022, ISSN 2230-7540

DOI: https://doi.org/10.29070/859t0889

Check for updates

बाल मनोविज्ञान में सीखने के सिद्धांत और अभ्यास

उर्मिला [1] * , डॉ. संदीप कुमार [2]

1. रिसर्च स्कॉलर, श्री कृष्णा यूनिवर्सिटी, छतरपुर, मध्य प्रदेश, भारत
ouriginal.sku@gmail.com ,
2. प्रोफेसर, श्रीकृष्णा यूनिवर्सिटी, छतरपुर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश: शिक्षा मानव विकास की नींव है। यह बच्चे के व्यक्तित्व का विकास कर उसे सुंदर बनाता है। शिक्षा बालक को अपने आचरण, क्रियाकलाप एवं व्यवहार को समाजोपयोगी बनाने हेतु मार्गदर्शन करती है। शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य समाज, राष्ट्र और संपूर्ण विश्व के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण अपना पाता है और अपने कर्तव्य का भली-भांति पालन कर पाता है। रेमोंट के शब्दों में, "शिक्षा विकास की वह प्रक्रिया है जिसमें मनुष्य को शैशवावस्था से परिपक्वता तक की प्रक्रिया शामिल होती है जिसके द्वारा वह अपने भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वातावरण के विभिन्न तरीकों से धीरे-धीरे खुद को ढालता है।" शिक्षा एक आजीवन प्रक्रिया है और जन्म से लेकर कब्र तक जारी रहती है। वास्तविक अर्थों में शिक्षा मानवता का मानवीकरण कर जीवन को सभ्य, सुसंस्कृत एवं प्रगतिशील बनाना है। मनुष्य प्रतिदिन अपने दैनिक अनुभवों से कुछ न कुछ सीखता है। सीखने में उसकी भागीदारी की विशेषता तल्लीनता, जोश और समर्पण है। लेकिन इस सीखने के लिए छात्र को अपने ज्ञान का निर्माण करने के लिए अधिक महत्वपूर्ण रणनीति/शैली की आवश्यकता होती है। उपलब्ध अनेक शैलियों के आधार पर, छात्र सूचना प्रसंस्करण के लिए किसी भी शैली को अपना सकते हैं। सीखने की शैली वे विशेषताएँ और पसंदीदा तरीके हैं जिनका उपयोग कोई व्यक्ति जानकारी इकट्ठा करने, पहचानने और संसाधित करने के लिए करता है (फ्लेमिंग, 2001)। सीखने की शैलियाँ छात्रों को विषय वस्तु को बहुत आसानी से सीखने में मदद करती हैं और इस गतिविधि में शिक्षक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

मुख्य शब्द: शैक्षिक मनोवैज्ञानिक, विकास, व्यावसायिक शिक्षा

---------- X ----------

परिचय

शैक्षिक मनोविज्ञान का क्षेत्र कई अलग-अलग युगों से विकसित हुआ है। शैक्षिक मनोविज्ञान प्राचीन यूनानी दार्शनिकों के समय से अपनी उत्पत्ति से बहुत आगे बढ़ चुका है; यह अब शैक्षिक अध्ययन का एक आकर्षक उपक्षेत्र है। पिछले कुछ वर्षों में शैक्षिक मनोविज्ञान के विभिन्न विचार और तरीके विकसित हुए हैं, और इस क्षेत्र ने शिक्षा और मनोविज्ञान दोनों से संबंधित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला की जांच की है। शिक्षा की प्रकृति के संबंध में, इनमें से प्रत्येक विचारधारा एक अद्वितीय परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है।

हम इस अध्याय में शैक्षिक मनोविज्ञान के विकास और इसकी तकनीकों पर एक नज़र डालना चाहते हैं। शैक्षिक मनोविज्ञान के मूलभूत सिद्धांतों और प्रथाओं, या इसके ऐतिहासिक संदर्भ की जांच, व्यवसाय का पहला क्रम है।

शिक्षा का उद्देश्य किसी की संज्ञानात्मक, भावनात्मक और मनोदैहिक क्षमताओं को परिवर्तित करके प्रशिक्षण और निर्देश के माध्यम से मानव विकास को विकसित करना है। जब दो या दो से अधिक व्यक्ति, इस मामले में प्रोफेसर और छात्र, पारस्परिक रूप से लाभप्रद प्रशिक्षण और बातचीत में संलग्न होते हैं, तो परिणाम यह होता है कि इसमें शामिल लोग कैसे सोचते हैं और व्यवहार करते हैं, इसमें एक आदर्श बदलाव होता है।

परिवारों और समाज में एक साथ रहना, शिक्षा संबंधी दुविधा के केंद्र में है। किसी व्यक्ति का जीवन और संस्कृति उनके शैक्षिक अनुभवों से आकार लेती है, जिससे शिक्षा एक महत्वपूर्ण गतिविधि बन जाती है (इंटारती, 2016)। क्योंकि आज का समाज शिक्षा के लिए ज़िम्मेदार है - जो बदले में राष्ट्र के भविष्य को निर्धारित करता है - शिक्षा की दुनिया की खामियों को ठीक करने और लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए शिक्षा के मुद्दों पर बारीकी से ध्यान देना महत्वपूर्ण है। इसलिए, इस स्थिति में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

चूँकि शिक्षक छात्रों की उपलब्धि में एक महत्वपूर्ण घटक है, इसलिए यह आवश्यक है कि उनके पास अपनी शैक्षणिक

जिम्मेदारियों को प्रभावी ढंग से पूरा करने के लिए व्यापक और अद्यतन ज्ञान और अनुभव हो। आइरिस वी. कुली के अनुसार, जो शिक्षक अपने छात्रों की ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील हैं, वे समझते हैं कि जानकारी और व्यक्तिगत अनुभव के अलावा अन्य कारक भी हैं जो बाल विकास में महत्वपूर्ण हैं। पारस्परिक संबंधों से संबंधित कारक भी उनके कार्य विवरण का हिस्सा होने चाहिए। मनोवैज्ञानिक शोध के अनुसार, किसी के संपूर्ण परिवेश में व्यक्तिगत अखंडता स्वस्थ विकास का एक प्रमुख घटक है। जब वे अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं, तो प्रभावी शिक्षक कभी भी इन तत्वों की अनदेखी नहीं करते हैं । (सकेरबाऊ, 2018)

साहित्य की समीक्षा

अज़ुरा, यूनी एट अल। (2022) यह अध्ययन सीखने की प्रक्रियाओं में समस्याओं का सामना करता है, जैसे शिक्षक छात्र की स्थिति और स्थिति को नहीं समझते हैं, वे गलत तरीके लागू करते हैं, या सीखने की प्रक्रिया उबाऊ हो जाती है। शिक्षकों के लिए मनोवैज्ञानिक शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका उन्हें छात्रों के मनोवैज्ञानिक पहलुओं को समझने में मदद करना है ताकि शिक्षकों के पास विशेष छात्र विशेषताओं के लिए प्रभावी शिक्षण तकनीकों को लागू करने के लिए बुनियादी नियम हों। इस अध्ययन का उद्देश्य सीखने की प्रक्रिया में शिक्षकों के लिए मनोविज्ञान की आवश्यक भूमिका और छात्रों के अध्ययन में शिक्षकों के लिए मनोवैज्ञानिक दायरे को जानना है।

शर्मा, सोनल. (2017) इस लेख का उद्देश्य शिक्षण-अधिगम वातावरण को अनुकूल बनाने में शैक्षिक मनोविज्ञान की भूमिका को समझने की कोशिश करना है। लेखक इस लेख में शिक्षण-सीखने का एक अनुकूल वातावरण बनाने में शैक्षिक मनोविज्ञान की भूमिका और योगदान पर ध्यान केंद्रित करेंगे। शैक्षिक मनोविज्ञान कक्षाओं में मनोविज्ञान को व्यावहारिक रूप से लागू करने से प्राप्त होता है। यह शिक्षकों को सीखने की प्रक्रिया, अनुदेशात्मक रणनीतियों और शिक्षकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उचित तरीकों, तकनीकों, दृष्टिकोण और उपकरणों का चयन करने में मदद करता है, जिससे बेहतर शिक्षण होता है।

जेसेउ, स्टेफ़नी। (2021) जबकि मनोविज्ञान पढ़ाना हमेशा कठिन होता है, सीखने के मनोविज्ञान के बारे में पाठ्यक्रम पढ़ाना प्रशिक्षकों के लिए अद्वितीय चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। सीखने के पाठ्यक्रमों में विशिष्ट भाषा और प्रक्रियाएँ होती हैं जो मनोविज्ञान के अन्य क्षेत्रों में नहीं पाई जाती हैं, छात्र कुछ गलत धारणाओं के साथ पाठ्यक्रमों में प्रवेश करते हैं, और शिक्षण-अधिगम से संबंधित प्रकाशित सामग्री की कमी हो सकती है।

गुनबास, निलगुन एट अल। (2022) मनोविज्ञान शिक्षण ज्यादातर शिक्षक-केंद्रित होता है, जो छात्रों की सक्रिय शिक्षा को छोड़ सकता है, जैसा कि मनोविज्ञान के प्रशिक्षकों द्वारा बताया गया है। उच्च शिक्षा में, छात्रों की समूह चर्चाओं के लिए वीडियो-आधारित मामलों का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है जिसमें छात्र सक्रिय रूप से शामिल होते हैं। सात डिज़ाइन सिद्धांतों के साथ एंकर्ड इंस्ट्रक्शन (एआई) वीडियो-आधारित सार्थक संदर्भ प्रस्तुत करता है जिसमें वास्तविक जीवन की समस्याएं अंतर्निहित होती हैं।

बाल मनोविज्ञान

विकास की प्रकृति के बारे में ज्ञान और बच्चों के परिपक्व होने पर होने वाले महत्वपूर्ण संरचनात्मक, जंक्शनात्मक और व्यवहारिक परिवर्तनों को कैसे नियंत्रित किया जाए, यही बाल विकास (जिसे बाल मनोविज्ञान भी कहा जाता है) के बारे में है। बच्चों में कुछ लक्षण और व्यवहार कैसे और क्यों उभरते हैं इसका अध्ययन इस क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण है। ऐसी स्थितियों से निपटने के लिए डेटा एकत्र करना और रणनीतियाँ अक्सर सामने आती हैं। यह समझना कि बच्चे समय के साथ कैसे बढ़ते और बदलते हैं, साथ ही विभिन्न व्यक्तित्व लक्षणों की परिपक्वता, बाल मनोविज्ञान और बाल विकास के क्षेत्र के लिए मौलिक है।

क्या बाल मनोविज्ञान और विकास मनोविज्ञान विनिमेय शब्द हैं? यह एक सामान्य प्रश्न है. क्या बच्चे कैसे बढ़ते और विकसित होते हैं इसका अध्ययन अपने स्वयं के शैक्षणिक अनुशासन के रूप में योग्य है? बाल मनोविज्ञान और विकासात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्रों को अक्सर मिला दिया जाता है। लेकिन वह सब नहीं है। गर्भधारण के क्षण से लेकर मृत्यु के क्षण तक, अध्ययन का एक निकाय है जिसे विकासात्मक मनोविज्ञान के रूप में जाना जाता है जो व्यवहार और आचरण में परिवर्तन की जांच करता है। हालाँकि, चौदह वर्ष की आयु तक, बच्चे के विकास का ध्यान इस बात पर होता है कि किसी व्यक्ति के लक्षण और क्षमताएँ

कैसे बदलती और विकसित होती हैं। दूसरे, क्या हम कह सकते हैं कि यह एक विशिष्ट वैज्ञानिक अनुशासन है? यह अपनी वैज्ञानिक योग्यता पर खड़ा है। अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र में व्यापक नियम खोजना इसका प्राथमिक लक्ष्य है। लोग कैसे बड़े होंगे यह समझना और भविष्यवाणी करना इसका मुख्य जोर है। बच्चों के लिए परामर्श और सहायता पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। वह जिस चीज़ को संबोधित करता है वह एक स्पष्ट परिभाषा प्रदान करेगा।

प्रकृति—विकास सतत है

विकास में निरंतरता की धारणा विकास के विचार का मौलिक आधार है। सतत विकास प्रक्रिया के कई चरणों के बीच वैध निरंतरता होती है, और प्रत्येक चरण की विशेषताएं अगले चरण को प्रभावित करती हैं। ये संशोधन वृद्धिशील हैं.

परिवर्तन प्रक्रिया आनुवंशिक प्रवृत्ति और पर्यावरणीय कारकों दोनों से प्रभावित होती है। पर्यावरण और जीवों में भी चक्रीय परिवर्तन होते हैं।

बच्चों में विकास वैज्ञानिक पद्धति से होता है। बच्चों के साथ काम करते समय, मनोवैज्ञानिक घटनाओं को रिकॉर्ड करने, विश्लेषण करने और उनके बीच संबंध बनाने के लिए प्राकृतिक, असंरचित सेटिंग्स की तलाश करते हैं। माता-पिता और बच्चों के बीच संबंध, सांस्कृतिक आत्मसात, और समय और संदर्भ में सहकर्मी संबंध सभी ऐसी घटनाओं के उदाहरण हैं जो प्रयोगात्मक अध्ययन को अस्वीकार करते हैं। प्रकृतिवादी अवलोकनों को इसका आधार बनाना चाहिए।

बच्चों की भावनाओं, दृष्टिकोण और मूल्यों से छेड़छाड़ करना अनैतिक और अव्यावहारिक है। माता-पिता-बच्चे की बातचीत पर शोध करने के लिए, कोई भी महिलाओं को निर्देशों के अनुसार जानबूझकर अपने बच्चों को अस्वीकार करने या प्रशंसा करने के लिए नहीं कह सकता है। यह निर्धारित किए बिना कि यह उनके आचरण को कैसे प्रभावित करेगा, बच्चों को शारीरिक रूप से दंडित करना या वंचित करना स्वीकार्य नहीं है।

विषय-वस्तु बाल मनोविज्ञान

गर्भाधान के बाद से बच्चे को समझना, आनुवंशिकता संचरण के तंत्र, मां और बच्चे दोनों के लिए प्रसव पूर्व देखभाल का महत्व और विशेष ध्यान देने की आवश्यकता वाले अन्य कारक (उदाहरण के लिए, मातृ पोषण, बीमारी, एक्स-रे, दवाएं इत्यादि) सभी भाग हैं बाल मनोविज्ञान का. डिंब, भ्रूण और भ्रूण के विकास को समझना निवारक देखभाल ज्ञान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

बाल मनोविज्ञान में प्रागैतिहासिक काल

बाल मनोविज्ञान का क्षेत्र हाल ही में पश्चिम में कद और गतिविधि में बढ़ा है। हालाँकि, 17वीं शताब्दी तक बचपन को जीवन के एक विशिष्ट चरण के रूप में मान्यता नहीं दी गई थी। प्लेटो ने बाल विकास में रुचि विकसित की और किसी व्यक्ति की क्षमताओं को आकार देने और मुकाबला करने के तंत्र में प्रारंभिक बचपन की शिक्षा के महत्व को देखना शुरू कर दिया। उनका ध्यान उस शिक्षा पर था जिसे प्राथमिक तत्व के रूप में बच्चे को ध्यान में रखकर तैयार किया गया था। बाल मनोविज्ञान ने अपेक्षाकृत कम समय में एक लंबा सफर तय किया है। परिणामस्वरूप, ऐसी प्रगति की पृष्ठभूमि के बारे में सीखना मूल्यवान है।

सीखने की परिभाषा

अध्ययन और सीखना दो चीजें हैं जो परस्पर जुड़ी हुई हैं और शैक्षिक प्रक्रिया में इन्हें अलग नहीं किया जा सकता है। शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षकों और छात्रों के बीच बातचीत शामिल होती है, जिसे आमतौर पर अध्ययन और सीखना कहा जाता है। एक प्रक्रिया जो शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया और छात्रों के वातावरण को विनियमित कर सकती है ताकि यह उन्हें प्रेरित कर सके, यही सीखने का सार है।

सीखने की प्रक्रिया छात्रों को दिशा, मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करती है। विद्यार्थियों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं की संख्या अक्सर एक मार्गदर्शक के रूप में शिक्षक की भूमिका के विपरीत होती है। बेशक, सीखने में कई अंतर होते हैं, जैसे कि

उन छात्रों के बीच जो विषय-वस्तु को पचा सकते हैं और उन छात्रों के बीच जो विषय-वस्तु को पचाने में धीमे हैं। इन दो अंतरों के कारण शिक्षकों को प्रत्येक छात्र की परिस्थितियों के अनुरूप सीखने की रणनीतियाँ निर्धारित करने में सक्षम होना पड़ता है। सीखना अनिवार्य रूप से एक प्रयास है, परिवर्तन की एक प्रक्रिया है जो व्यक्तियों में अनुभव या उनके पर्यावरण के साथ बातचीत के माध्यम से होती है (फखरुराज़ी, 2018)। दूसरे शब्दों में, सीखना व्यक्ति के लिए स्थितियों एवं स्थितियों को बदलने की एक व्यवस्था है।

सीखने की प्रक्रिया का अस्तित्व शैक्षिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से होने वाली उद्देश्य-सचेत अंतःक्रिया को दर्शाता है। यदि सीखना कुछ चरणों के माध्यम से आगे बढ़ता है, तो यह सीखना तुरंत नहीं होता है, अर्थात् छात्रों के साथ शिक्षण गतिविधियों में शिक्षकों की बातचीत, डिजाइन, कार्यान्वयन और मूल्यांकन के चरणों के माध्यम से व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ना। शिक्षक छात्रों को सीखने में सहायता करते हैं ताकि वे अच्छी तरह से सीख सकें। जैसा कि अपेक्षित था, यह बातचीत एक प्रभावी सीखने की प्रक्रिया का निर्माण करेगी (हनाफी, 2014)।

ओइमर हमालिक ने कहा कि सीखना मानवीय तत्वों का एक संयोजन है: छात्र और शिक्षक; किताबें, ब्लैकबोर्ड, चॉक और सीखने के उपकरण जैसी सामग्री; कमरे और दृश्य-श्रव्य कक्षाएं जैसी सुविधाएं; और प्रक्रियाएं जो सीखने के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एक दूसरे के साथ बातचीत करती हैं (हमालिक, 2011)। सरल शब्दों में, सीखना विकास और जीवन के अनुभवों की निरंतर अंतःक्रिया है। हालाँकि, एक जटिल गतिविधि सीखने के इस पहलू को पूरी तरह से समझा नहीं सकती है। ट्रायंटो का दावा है कि सीखने के सार में एक भावी शिक्षक और अन्य शिक्षण संसाधनों के साथ छात्रों की बातचीत को निर्देशित और निर्देशित करने का एक शिक्षक का प्रयास शामिल है, जिससे सीखने के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके।

उपरोक्त विवरण और स्पष्टीकरण के आधार पर, यह स्पष्ट है कि सीखना शिक्षकों और छात्रों के बीच दो-तरफा बातचीत है। लक्षित दर्शकों से सीधा संवाद होता है। इस प्रकार, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सीखना छात्रों को अच्छी तरह से सीखने, ज्ञान प्राप्त करने और दृष्टिकोण बनाने में मदद करने की एक प्रक्रिया है जो शिक्षक द्वारा निर्देशित और निर्देशित होती है। पहले, प्रत्येक छात्र के बीच अंतर का भी उल्लेख किया गया है। इसलिए, शैक्षिक मनोविज्ञान को समझकर और उसका अध्ययन करके, शिक्षक छात्रों को उनकी विशेषताओं और व्यक्तित्वों के आधार पर मार्गदर्शन या मार्गदर्शन दे सकते हैं, जो सफल होने और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सीखने की प्रक्रिया में बहुत प्रभावशाली है। अच्छी शिक्षा वह सीख है जो स्वयं सीखने के उद्देश्यों को प्राप्त कर सके। इस प्रकार, शिक्षक न केवल ज्ञान हस्तांतरित करते हैं बल्कि सीखने की प्रक्रिया में छात्रों की रुचियों और दृष्टिकोणों को भी जानते हैं।

बेहतर शिक्षण-अधिगम वातावरण के लिए शैक्षिक मनोविज्ञान

मानव व्यवहार को बेहतर समझना और नियंत्रित करना मनोविज्ञान है। स्किनर कहते हैं, "मनोविज्ञान व्यवहार और अनुभव का विज्ञान है" (जैसा कि कुमारी, सुंदरी और राव, 2006 में उद्धृत किया गया है)। फर्नाल्ड और फर्नाल्ड (2004) के शब्दों में, "मनोविज्ञान व्यवहार और अनुभव का विज्ञान है; जीवों के उनके पर्यावरण के साथ समायोजन का विज्ञान।

शैक्षिक मनोविज्ञान मनोविज्ञान की एक व्यावहारिक शाखा है जो शिक्षा और मनोविज्ञान को जोड़ती है। मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों, कानूनों और तकनीकों को शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक रणनीतियों, शिक्षण-सीखने की स्थितियों, परिणामों और निष्कर्षों के विकास के लिए लागू किया जाता है, और वे संज्ञानात्मक और व्यवहारिक दोनों पहलुओं सहित मानव सीखने के वैज्ञानिक अध्ययन से संबंधित हैं। स्किनर ने कहा कि "शैक्षिक मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षण और सीखने से संबंधित है।" यह एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण है जो शिक्षकों, शिक्षार्थियों, सीखने के कार्यों, सीखने के माहौल और शैक्षिक सेटिंग्स की विभिन्न विशेषताओं को समझने के लिए मनोवैज्ञानिक संरचनाओं और उपकरणों का उपयोग करता है। पील ने कहा कि "शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षक को अपने विद्यार्थियों के विकास, उनकी क्षमताओं की सीमा और सीमाओं, उनके सीखने की प्रक्रिया और उनके सामाजिक संबंधों को समझने में मदद करता है।" यह सीखने और शिक्षण को प्रभावित करने वाले कई कारक के बारे में जानकारी देता है, साथ ही निर्देशों को सुधारने के लिए उपयोगी और परीक्षण किए गए विचार भी देता है। यह शैक्षिक मनोविज्ञान है जो प्रभावी शिक्षक बनाता है। शिक्षकों को मौखिक और अशाब्दिक रूप से सकारात्मक सुधार और सुधारात्मक प्रतिक्रिया दें। अपेक्षाओं पर छात्रों से

चर्चा करें।

अंततः, हम कह सकते हैं कि शैक्षिक मनोविज्ञान निम्नलिखित विचारों से जुड़ा है:
• विद्यार्थी का व्यक्तिगत विकास, आवश्यकताएँ, क्षमताएँ, रुचि और योग्यता

• एक सीखने का माहौल जिसमें समूह गतिशील होता है और सामाजिक अंतःक्रियाओं से सीखने को बढ़ावा देता है

• सीखने की प्रकृति, प्रक्रिया और प्रभावी बनाने का तरीका

अनुकूल शिक्षण-अधिगम वातावरण के लिए शैक्षिक मनोविज्ञान

विद्यालय में अनुकूल वातावरण बनाने के लिए शैक्षिक मनोविज्ञान का उपयोग करने के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है। उदाहरण के लिए, Williams and Williams (ND) ने पांच प्रमुख घटकों को छात्र प्रेरणा में सुधार के लिए पाया। वे शिक्षक, विद्यार्थी, सामग्री, विधि या प्रक्रिया और परिवेश हैं। ये पांच बातें शिक्षकों को प्रेरित कर सकती हैं या उन्हें रोक सकती हैं। शिक्षक प्रेरणा की नई समझ के बारे में आत्म-जागरुक होने के लिए अपने व्यवहार का निरीक्षण कर सकते हैं। AIMS (1990) ने दिखाया कि हर विद्यार्थी को कक्षा में प्रेरणा मिलती है। वर्मा (1998) ने दिखाया कि सही निर्देशन या प्रबंधन संघर्ष को स्वस्थ बना सकता है। संघर्ष को स्थायी रुप से दूर करने के लिए, शिक्षकों को संघर्ष के मूल कारण को समझना चाहिए, न कि सिर्फ इसके लक्षणों को। जोन्स (2004) ने पाया कि संघर्ष समाधान शिक्षा रचनात्मक संबंध बनाने और स्कूलों में सुरक्षित वातावरण बनाने के लिए आवश्यक जीवन कौशल प्रदान करती है।

कबम्बर और लेउंग (2006) ने पाया कि शिक्षण-सीखने का माहौल विद्यार्थियों को तनाव महसूस किए बिना अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित कर सकता है। ब्लेक और पोप (2008) ने वायगोत्स्की और पियागेट के सिद्धांतों को प्रारंभिक कक्षा में शिक्षण रणनीतियों में शामिल किया। नतीजे बताते हैं कि छात्रों की सीखने की क्षमता में वृद्धि होने की संभावना है। दोनों सिद्धांतों का कक्षाओं में उपयोग करना फायदेमंद है। डनलोस्की, रॉसन, मार्श, नाथन और विलिंगम (2013) ने शैक्षिक मनोवैज्ञानिकों और संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिकों द्वारा बनाए गए उपयोग में आसान सीखने के तरीकों की जांच की जो विद्यार्थियों को उनके सीखने के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं। बोजुवॉय, मोलेटसेन, स्टोफाइल, मुल्ला और सिल्वेस्टर (2014) ने प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में विद्यार्थियों के अनुभवों को सीखने में सुधार के लिए सहायता सेवाओं के प्रावधान और उपयोग से जोड़ा। परिणामों से पता चला कि शिक्षकों ने अपने स्कूलों, शिक्षकों और साथियों से सीखने में कई तरह की सहायता प्राप्त की और इसका उपयोग किया।

सीखने का समर्थन शिक्षार्थियों की शैक्षणिक, सामाजिक और भावनात्मक जरूरतों को पूरा करने में मदद करता है, सीखने में आने वाली बाधाओं को दूर करता है, एक अनुकूल वातावरण बनाता है, शिक्षार्थियों का आत्म-सम्मान बढ़ाता है और उनके अकादमिक प्रदर्शन को सुधारता है। सोगुनरो (2015) ने वयस्क शिक्षार्थियों को उच्च शिक्षा में आठ प्रेरक कारक का अध्ययन किया। ये प्रेरक कारकों में शामिल हैं: शिक्षा की गुणवत्ता, पाठ्यक्रम की गुणवत्ता, प्रासंगिकता और व्यावहारिकता, इंटरैक्टिव कक्षाएं और प्रभावी प्रबंधन प्रथाएं, आत्म-निर्देशन, एक अनुकूल सीखने का वातावरण, प्रभावी शैक्षणिक सलाह देने वाली प्रथाएं और प्रगतिशील मूल्यांकन और समय पर प्रतिक्रिया परिणामों से पता चला कि ये आठ घटक उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों की सीखने की इच्छाशक्ति को कम करने या बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उपरोक्त समीक्षाओं के आधार पर, हम यह मान सकते हैं कि शैक्षिक मनोविज्ञान बेहतर शिक्षण वातावरण बनाने में मदद करता है। आइए देखें कि शिक्षार्थियों को इससे क्या फायदा हो सकता है।

बाल मनोविज्ञान - शिक्षकों के लिए एक मार्गदर्शिका

बच्चों को भविष्य के लिए शामिल करने और तैयार करने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वे छात्रों को सही और गलत की जांच करना और तर्क करना सिखाने के लिए शैक्षणिक पाठों के साथ-साथ कई युक्तियों और इंटरैक्टिव तरीकों का उपयोग कर सकते हैं। बच्चों का दिमाग युवा, स्पष्ट और अनुकूलनीय होता है, जो पहचान, चेतना और सहानुभूति से ओत-प्रोत होने के

लिए तैयार होता है। उन्हें शैक्षणिक क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने की तुलना में उन्हें भावनात्मक और मानसिक रूप से मजबूत व्यक्तियों में ढालना कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। जिस वातावरण में बच्चे का पालन-पोषण होता है, उसका उनके व्यक्तित्व पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। नवीन स्कूल शिक्षण पद्धतियाँ "शिक्षक-छात्र" और बच्चों के मनोवैज्ञानिक व्यवहार के बीच बातचीत के नए तरीकों को शामिल करके शिक्षा में सुधार कर सकती हैं। आइए देखें कि बाल मनोविज्ञान क्या है।

विकास

ध्यान और धारणा

ध्यान बढ़ाना और विद्यार्थियों की चीजों में रुचि जगाना एक शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिकाओं में से एक है। यहां तक की ध्यान रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जिसके लिए शिक्षकों को अपने आंदोलन की आवाज़ में कुशल होने और अपनी बातचीत के साथ विश्वास विकसित करने की आवश्यकता होती है। सामाजिक और शारीरिक अभाव स्कूल में विद्यार्थी के प्रदर्शन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं।

संकल्पना निर्माण और संज्ञानात्मक विकास

एक प्रभावी प्रस्तुति में विषय अभिविन्यास, एक अच्छा प्रेरण, छात्रों को प्रेरित करने के लिए एक त्वरित सेट, पहले से अर्जित ज्ञान का संदर्भ देने वाला एक संज्ञानात्मक समूह और तथ्यात्मक और वैचारिक सामग्री के बीच अंतर को उजागर करने वाला एक शैक्षिक सेट शामिल होता है। एक अच्छा शिक्षक हमेशा अपने छात्रों को अवधारणाओं को समझने में मदद करने के तरीके खोजता रहता है। प्रभावी शिक्षण विधियों के बारे में सीखने से आपको संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांतों में भी मदद मिलेगी।

भाषा और साक्षरता

हम जो भाषा बोलते और सोचते हैं वह सब कम उम्र में ही विकसित हो जाती है। चाहे मौखिक हो या गैर-मौखिक, प्रभावी संचार आवश्यक है। प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को बोली जाने वाली भाषा के कार्यों और इसकी शुरुआत और अधिग्रहण को समझने की आवश्यकता है। शब्दावली विकास के बारे में जानने से शिक्षकों और अभिभावकों दोनों को लाभ होता है।

- **सीखना**

सीखने का सिद्धांत और अभ्यास

मनोवैज्ञानिकों ने इस विषय पर शोध करने में वर्षों बिताए हैं और कुछ लाभकारी ज्ञान और मार्गदर्शन विकसित किया है। शिक्षकों को प्रत्येक व्यक्ति के सीखने के व्यवहार की पहचान करनी चाहिए। सही ढंग से किए जाने पर सीखने को पुरस्कृत किया जाना चाहिए। यह व्यक्ति को प्रोत्साहित करेगा और दूसरों को अपने साथियों का मार्ग तलाशने की अनुमति देगा।

- **सीखना और स्मृति**

सीखने और सिखाने के अधिकांश पहलू सीखने की प्रक्रिया में स्मृति की भूमिका के इर्द-गिर्द घूमते हैं। शिक्षकों ने लघु और दीर्घकालिक स्मृति की धारणा को प्रभावशाली पाया है। एक शिक्षक के रूप में, आपको अल्पकालिक और दीर्घकालिक स्मृति को अधिकतम करने के लिए अपने विषय को सावधानीपूर्वक डिजाइन करने की आवश्यकता है। छात्रों को उपयोगी जानकारी याद रखने और पुनः प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास करें। उन्हें संपूर्ण और आंशिक रूप से सीखना, अभ्यास करने का सामूहिक और वितरित तरीका और सीखना कैसे सीखें जैसी अवधारणाओं को समझाया जाना चाहिए। छात्रों को अपने अध्ययन और पुनरीक्षण सत्र के दौरान इससे लाभ होगा।

- **मानव प्रेरणा**

युवाओं को सीखने के लिए क्या प्रेरित करता है, इसके बारे में एक शिक्षक की समझ महत्वपूर्ण है। कुछ महत्वपूर्ण या

संवेदनशील चरण बचपन में बच्चे की शिक्षा को प्रभावित कर सकते हैं। के स्रोतों की पहचान करना महत्वपूर्ण है प्रेरक चुनौतियाँ ऐसे बच्चों के लिए, क्योंकि वे स्कूल में उनके प्रदर्शन को प्रभावित कर सकते हैं। प्रभावी शिक्षण के लिए बच्चों के बाहरी और आंतरिक प्रेरकों को समझना आवश्यक है। शिक्षकों और छात्रों दोनों को अपना सर्वश्रेष्ठ कार्य करने के लिए तनाव का प्रबंधन करना चाहिए।

- व्यक्तिगत मतभेद
- संज्ञानात्मक क्षमता

बच्चों की बौद्धिक प्रतिभाएँ बहुत भिन्न होती हैं। बुद्धि परीक्षण डिज़ाइन के बारे में ज्ञान केवल एक शिक्षक को किसी विशेष छात्र के लिए सर्वोत्तम कार्यवाही का निर्धारण करने में सहायता कर सकता है। एक बच्चे के खराब प्रदर्शन का विश्लेषण किया जाना चाहिए।

- **प्रतिभाशाली और प्रतिभाशाली**

कई शिक्षकों को ऐसे छात्र मिलते हैं जो प्रतिभाशाली और मेधावी होते हैं। लेकिन, यह समझें कि प्रत्येक छात्र को सहायता की आवश्यकता है। शिक्षकों को यह विश्वास नहीं करना चाहिए कि बुद्धिमान और प्रतिभाशाली छात्र अपना ख्याल रख सकते हैं। उन्हें बस विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है जो उनकी ताकत के अनुरुप हो। एक शिक्षक की भूमिका ऐसे छात्रों के प्रदर्शन को बढ़ाने की है।

निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन मनोवैज्ञानिक भलाई, अध्ययन भागीदारी, शैक्षणिक वातावरण और सरकार की शैक्षणिक उपलब्धि पर केंद्रित है। और निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्र। चयन के लिए नमूने में से, अन्वेषक ने स्कूल शिक्षा निदेशालय की वेबसाइट से जिला श्रीनगर के स्कूलों की सूची प्राप्त की। सूची से, 10 सरकारी. और 6 निजी स्कूलों को यादृच्छिक रूप से चुना गया, यानी कुल सरकारी स्कूलों का 10%। माध्यमिक विद्यालय और 10% निजी माध्यमिक विद्यालय। फिर, अन्वेषक ने 120 सरकार का चयन किया। और इन स्कूलों से सरल यादृच्छिक नमूनाकरण द्वारा 120 निजी स्कूल के छात्र। इस प्रकार, 9वीं और 10वीं कक्षा में कुल 240 छात्र (सरकारी और निजी) पढ़ रहे हैं। इन 240 छात्रों में से 104 लड़के और 136 लड़कियाँ शामिल हैं। नमूना विषयों के बीच मनोवैज्ञानिक भलाई, अध्ययन भागीदारी और शैक्षणिक माहौल का आकलन करने के लिए, सिसौदिया, डीएस, और चौधरी, पी. (2012) द्वारा विकसित मनोवैज्ञानिक कल्याण स्केल; मिश्रा, केएस (2012) द्वारा निर्मित लर्निंग स्टाइल इन्वेंटरी और मिश्रा, केएस (2012) द्वारा विकसित स्कूल पर्यावरण इन्वेंटरी का उपयोग किया गया था। शैक्षणिक उपलब्धि का आकलन करने के लिए, 8वीं और 9वीं परीक्षा में प्राप्त अंकों के कुल प्रतिशत का उपयोग किया गया था।

मनोवैज्ञानिक भलाई का समग्र औसत स्कोर दर्शाता है कि सरकार। स्कूली छात्रों का मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य निजी स्कूल के छात्रों की तुलना में अधिक होता है। हालाँकि, सरकार। और निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में मनोवैज्ञानिक कल्याण के सभी आयामों पर नगण्य अंतर पाया गया।

स्कूली छात्र निजी स्कूल के छात्रों की तुलना में सक्रिय रचनात्मक और आलंकारिक पुनरुत्पादन (0.01 पर हस्ताक्षर) और सक्रिय सीखने की शैली (0.05 पर हस्ताक्षर) पसंद करते हैं। अन्य सीखने की शैलियों में, सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच नगण्य अंतर है। इससे पता चलता है कि सरकार. स्कूली छात्र स्वयं को उन गतिविधियों में शामिल करते हैं और आसानी से सीखते हैं जो ठोस अनुभवों, चित्रों और मॉडलों के रूप में प्रदान की जाती हैं।

निजी स्कूल के छात्रों की तुलना में स्कूली छात्रों का रुझान सीखने की शैली को पुन: प्रस्तुत करने में अधिक पाया गया है। नतीजे बताते हैं कि सरकार. स्कूली छात्र सीखने के मामले की नकल करने और अभ्यास करने में अधिक शामिल होते हैं। इसलिए, वे बिना कोई बदलाव किए सीखी गई बात को दोहराते हैं।

निजी स्कूल के छात्रों को सरकारी स्कूलों की तुलना में अपने शिक्षकों से उच्च स्वीकृति स्तर का एहसास हुआ। स्कूली छात्र. समग्र

औसत स्कोर पर, निजी स्कूल के छात्रों को सरकारी की तुलना में अपने स्कूल का माहौल थोड़ा अनुकूल लगता है। स्कूली छात्र. इस बीच, अन्य आयामों पर दोनों समूहों में नगण्य अंतर पाया गया।

संदर्भ

1. अज़ुरा, यूनी और टार्सोनो, टार्सोनो और हरमावन, ए. और निंगसिह, अरुम। (2022) । सीखने की प्रभावशीलता में शिक्षकों के लिए शैक्षिक मनोविज्ञान की भूमिका। जर्नल इनोवासी पेंडिडिकन अगामा इस्लाम (JIPAI)। 2. 83-93. 10.15575/जिपाई। v2i2.11809.
2. शर्मा, सोनल. (2017) । बेहतर शिक्षण-अधिगम वातावरण के लिए शैक्षिक मनोविज्ञान का उपयोग करना। 10.13140/आरजी.2.2.27333.76005।
3. जेसेउ, स्टेफ़नी। (2021) । सीखने का मनोविज्ञान पढ़ाना। 10.1007/978-3-030-26248-8_7-1.
4. गुनबास, नीलगुन और एगर आयडोगमस, मेलिके। (2022) । स्थिर निर्देश के फ्रेम में विकासात्मक मनोविज्ञान को पढ़ाना और सीखना। एजिटिम फकुल्टेसी डर्गिसी. 10.16986/एचयूजेई.2021073745।
5. क्लिक करें, केविन और श्वार्ट्ज, नील और बार्टेल, अन्ना। (2022) । शैक्षिक मनोविज्ञान: सीखना और निर्देश। 10.1007/978-3-030-26248-8_67-1.
6. वांग, जेनलिन और वांग, लामेई। (2015) । संज्ञानात्मक विकास: बाल शिक्षा। सामाजिक और व्यवहार विज्ञान का अंतर्राष्ट्रीय विश्वकोश। 10.1016/बी978-0-08-097086-8.92007-5।
7. एंटविस्टल, नोएल। (2022) । छात्र शिक्षण और विश्वविद्यालय शिक्षण पर एक शोध परिप्रेक्ष्य। वर्नोन वॉल व्याख्यान। 1. 3-19. 10.53841/बीपीएसवर्न.2022.1. एनिवर्सरीएडिशन. 3.
8. हैफेन, क्रिस्टोफर और हैमरे, ब्रिजेट और एलन, जोसेफ और बेल, कर्टनी और गिटोमर, ड्रू और पियांटा, रॉबर्ट। (2014) । माध्यमिक विद्यालय की कक्षाओं में बातचीत के माध्यम से शिक्षण। प्रारंभिक किशोरावस्था का जर्नल. 35. 10.1177/0272431614537117.
9. मेंडेस डी ओलिवेरा, सिंटिया और अल्मेडा, कार्ला और जियाकोमोनी, क्लाउडिया। (2022) । स्कूल-आधारित सकारात्मक मनोविज्ञान हस्तक्षेप जो बच्चों में कल्याण को बढ़ावा देते हैं: एक व्यवस्थित समीक्षा। बाल संकेतक अनुसंधान. 15. 10.1007/s12187-022-09935-3.